International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)
Volume 6 Issue 6, September-October 2022 Available Online: www.ijtsrd.com e-ISSN: 2456 – 6470

प्रवासी महिला लेखन और युगबोध

Vijendra Prasad Meena

Assistant Professor, Department of Hindi, SPNKS Government PG College, Dausa, Rajasthan, India

सार

यह आलेख प्रवासी भारतीय महिला साहित्यकारों के द्वारा लिखी कहानियों के बारे में है। यह दृष्टव्य है कि प्रवास के कारण इन महिलाओं में , उनके अपने देश के बारे में सोचने और समझने के नज़रिए में एक वस्तुनिष्ठता जन्म लेती है। उन के द्वारा लिखी कहानियों में ना सिर्फ़ महिलाओं के शोषण और संघर्ष का उल्लेख है, बल्कि उनकी प्रगति के भी प्रमाण मिलते हैं। स्त्री चेतना इन कहानियों में खूब उजागर होती है, और इन लेखिकाओं को स्त्री अधिकारवाद की अग्रणी अन्वेषक भी मानना होगा। इस आलेख ने इसी विषय के संबंध में भाषा, भूमंडलिकारन, राष्ट्रवाद, रंग भेद को भी नारीवाद और ख़ासकर प्रवासी भारतीयता के नज़रिए से देखा है। कई कहानियों का वर्णन किया गया है, और उनके महत्वपूर्ण पात्रों की चर्चा भी इस आलेख में सम्मिलित है। यह आलेख प्रवासी लेखन के क्षेत्र में वर्णित पीड़ा , सत्य , संस्कृति , परिवर्तन के चित्रण का एक सार्थक प्रयास है। युगबोधसमसामयिक परिस्थितियों के ज्ञान की अवधारणा है। समसामयिक परिस्थितियों में किसी काल की राजनितिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और आर्थिक स्थितियाँ शामिल मानी जाती हैं। युगबोध का सृजन प्रक्रिया से सीधा संबंध माना गया है। कलात्मक और साहित्यिक रचनाएं युगबोध से निर्मित होती हैं तथा उसका प्रकटन भी करती हैं।

How to cite this paper: Vijendra Prasad Meena "Diaspora Women's Writing and Yugbodh" Published in International Journal of Trend in Scientific Research and Development (ijtsrd), ISSN: 2456-6470, Volume-6 | Issue-6, October 2022, pp.1747-1753, URL: www.ijtsrd.com/papers/ijtsrd52161.pdf

IJTSRD52161

Copyright © 2022 by author (s) and International Journal of Trend in Scientific Research and Development Journal. This is an Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY 4.0) (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0)

दिव्या माथुर
आपका सफ़र

मेरे सम्पादन कर्म का सिलसिला शुरू हुआ प्रवासी भारतीय कवियों के कविता संग्रहों – 'पुरवाई, (दो खंडों में) 'तनाव' और 'नेटिव सेंटस' – से। फिर लंदन में आयोजित विश्व हिंदी सम्मलेन-1990 के दौरान मैं एकाएक बहुत सी प्रवासी लेखिकाओं के संपर्क में आई। इसे आप मेरी सनक भी कह सकते हैं कि क्योंकि एक के बाद एक मैं महिलाओं के कहानी-संग्रहों पर ही केंद्रित रही और अब तक मैं चार कहानी संग्रह सम्पादित कर चुकी हूँ। साहित्य में युगबोध की अभिव्यक्ति वस्तु चयन के साथ ही शिल्पगत प्रयोग के रूप में बी प्रकट होती है। उदाहरण के लिए आधुनिक मानसिकता का प्रतिफलन काव्य नाटकों के कथावस्तु औ शिल्प में भी दिखाई देता है। आधुनिक काव्य नाटकों के मुख्यतः तीन वर्ग हैं जो क्रमशः पुराकथा, इतिहास और वर्तमान समस्याओं के यथार्थ पर आधारित हैं। ये आधार निश्चय ही आधुनिक युगबोध से प्रेरित हैं। इसी प्रकार ये काव्य नाटक मंच विधान संबंधी नए प्रयोगों को ध्यान में रखकर रचे गए हैं जिस कारण आधुनिक युगबोध इनमें शिल्पित दिखाई देता है।[1]

शुरुआत हुई विदेश में बसी भारतीय लेखिकाओं की कहानियों के अँग्रेज़ी से हिंदी में अनुवाद से, जो ओडिस्सी-1 और ओडिस्सी-2 के रूप में प्रकाशित हुईं, आमुख लिखा रुख़साना अहमद ने ।अनीता देसाई, मेहरुन्निसा परवेज़, प्रतिभा रॉय, उषा प्रियंवदा, डॉ सूष्म बेदी और नबोनीता देव-सेन जैसी प्रतिष्ठित लेखिकाओं के साथ मैंने नई और उभरती हुई प्रवासी लेखिकाओं को भी सम्मिलित किया। विदेश में रोप दिए जाने पर पौधा विदेशी नहीं हो जाता बल्कि एक नए वातारण में पनपने की वजह से, उसमें अतिरिक्त सहिष्णुता और क्षमता जैसे अनन्य खूबियां आ जाती हैं। एक तरफ, उन्हें अपने देश की क़द्र पता लगती है तो दूसरी ओर, उनका दृष्टिकोण आत्मगत नहीं रहता; वस्तुनिष्ठ हो जाता है। विदेश में रहने वाले हिंदी-साहित्यकार, विशेषतः लेखिकाएं, जहां एक ओर इस दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हैं कि उनकी रचनाओं में विभिन्न देशों की राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियाँ हिन्दी की साहित्यिक रचनाशीलता का अंग बनती हैं, विभिन्न देशों के इतिहास और भूगोल का हिन्दी के पाठकों तक विस्तार होता है, विभिन्न शैलियों का आदान प्रदान होता है और इस प्रकार हिंदी साहित्य का अंतर्राष्ट्रीय विकास भी होता है।

उसके बाद आई आशा: Translated Short Stories by Indian Women Writing in Hindi, ज़रबानु गिफ़्फ़ोर्ड ने आमुख लिखा और इसमें शामिल थीं मन्नू भंडारी, शिवानी, मृदुला गर्ग, अलका सरायोगी, चित्रा मुद्गल, मृदुला सिन्हा, प्रतिभा रे, सुधा अरोड़ा, सुनीता जैन, आदि।

सौभाग्यवश, आर्ट्स कॉउंसिल ऑफ़ इंग्लैंड द्वारा मुझे एक कहानी संग्रह के सम्पादन के लिए फंडिंग मिली, जो होप-रोड लन्दन से प्रकाशित हुआ 'Desi Girls: Short Stories by

Indian Women Settled Abroad', जिसकी प्रस्तावना लिखी लेडी मोहिनी नून ने, मेरे इस योगदान की वजह से न केवल जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल द्वारा आयोजित एक सत्र, The Desi Diaspora में बल्कि रॉयल अल्बर्ट हॉल-लंदन में आयोजित उनके फेस्टिवल में भी मुझे उनके एक सत्र Inner Life of Translations के संयोजन के लिए आमंत्रित किया, जिसमें मेरे साथ थीं रख्शंदा जलील, फ्रांसेस्का ओर्सीनी, जैरी पिंटो टू और जिलियन राइट। 'देसी- गर्ल्स' में प्रकाशित कहानियों की स्त्रियाँ उच्च शिक्षित और अपने काम के क्षेत्र में अनोखी उपलब्धियों को प्राप्त करके भी अपने रहन-सहन में अपनी परम्पराओं व मर्यादायों को निभाते हुए अपनी 'देसी' छवि का आभास देती हैं।[2]

परिचय

प्रवासी भारतीय लेखिकाएँ

इन कहानी संग्रहों के सम्पादन के पीछे मेरा केवल एक ही उद्देश्य था कि भारत के बाहर विदेश में रहने वाली तमाम भारतीय स्त्रियों के उत्कृष्ट लेखन के बारे में सब लोग जान सकें। यह कहानियाँ उन भारतीय स्त्रियों की भावाभिव्यक्ति हैं जो अपना देश छोड़ने के बाद अन्य देशों में जाकर बसीं और उनका बाकी जीवन वहीं विकसित हुआ । यह सब लेखिकायें अपने किरदार के माध्यम से वहाँ के वातावरण में रहते हुए लोगों के जीवन, परिस्थितियों व उनकी समस्यायों से अवगत कराती हैं।

अक्सर मुझसे पूछा जाता है कि मेरे सभी संग्रहों की रचनाकार सिर्फ औरतें ही क्यों? तो इसका एक कारण यह है कि एक औरत ही दूसरी औरत के दुःख-दर्द और उसके मन की पीड़ा को अच्छी तरह से समझती है। आजकल औरतें कितने ही क्षेत्रों में बराबरी का काम कर रही हैं फिर भी उनके साथ पक्षपात व घटिया व्यवहार किया जाता है। वह बराबर के अधिकारों के लिए पुरुषों से भी अधिक मेहनत करती हैं पर काम के एवज में उन्हें पुरुषों से कम पैसे मिलते हैं; उन्हें तमाम और सुविधाओं से भी वंचित रखा जाता है। इसके अलावा कई बार विषम परिस्थितियों से गुज़रती हुई औरत को समाज से व अपनों से भी सहानुभूति की बजाय तिरस्कार व अपमान सहना पड़ता है। इन लेखिकाओं की कहानियों में स्त्री के संघर्ष व उसके उत्पीड़न का वही चित्रण देखने को मिलता है। कहानियों में औरत के आंसुओं का सैलाब है,जिसमे छिपा उसका दर्द, सिसकियाँ, मजबूरियाँ व टीसें अंतर्मन पर अपनी छाप छोड़ जाती हैं। इन्हें पढ़कर मन संवेदना से भर उठता है। नारी का अधिकारवाद भी लोगों के लिए एक समस्या बना हुआ है किन्तु उसके अधिकारों की लड़ाई बराबर चलनी चाहिए और इस लड़ाई में लेखिकाओं की स्वयं एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है।

इसी दौरान मुझे ओरल-कैंसर हो गया जिससे जूझते ढाई साल लग गए किन्तु उस दौरान भी मेरा सम्पादन का काम जारी रहा। ऑपरेशन के चार महीनो के अंदर ही मेरे द्वारा सम्पादित चौथे कहानी संग्रह 'इक सफ़र साथ साथ: प्रवासी लेखिकाओं की कहानियां' का लोकापर्ण 2018 में हॉउस ऑफ़ लॉर्ड्स में संपन्न हुआ, इसे प्रवासी साहित्य की यात्रा में एक विशिष्ट उपलब्धि माना गया क्योंकि इसमें शामिल हैं ब्रिटेन, यूरोप, अमेरिका, स्कैंडिनेविया, कनाडा, संयुक्त अरब अमीरात एवं चीन की 22 प्रतिनिधि हिंदी लेखिकाएं। संग्रह की भूमिका में लंदन विश्वविद्यालय की प्रॉफ़ेसर फ्रंचेस्का ऑर्सीनी कहती हैं कि 'इस संग्रह के ज़रिए हमें लेखिकाओं के सरोकारों और कथा-शैली से रूबरू होने के साथ-साथ "वेस्ट में" हिंदी लिखने का क्या मतलब है, उसपर भी सोचने का अवसर मिलता है, उन्हें एक साथ पढ़कर हमें यह पता चलता है कि आज की तारीख़ में हिंदी में लिख-सोचने वाली प्रथम पीढ़ी की प्रवासी भारतीय महिलाएँ क्या सोच और महसूस कर रही हैं।'[3]

अनिल जोशी जी ने अपनी प्रस्तावना में लिखा, 'यह कहानियां रिश्तों की धीमी आँच पर पकाई गई हैं, रेशम की तरह महीन क़ाती गई हैं, इनमें कोयल के स्वर की मधुरता और पपीहे के करूण स्वर हैं। बहुत सी कहानियों में आपको बहुत घटनाएं नहीं मिलेंगी परंतु इसमें जीवन का रस और जज़्बा है। जब आप विदेशों मे रहने वाले भारतीयों के अंतर्मन को माईक्रोस्कोप से देखना चाहें, जब आप उस परिवेश में रह-रहे समाज के स्त्री-पुरूष संबंधों और रिश्तों की गहरी पड़ताल करना चाहें, आप इस किताब को उठाएं, यह आपको एक ऐसी दुनिया में ले जाएगी जिसे देखने और दिखाने की दूरबीन प्रवासी स्त्री के पास ही है। यह कहानियां आपकी सोच को व्यापकता, दृष्टि को गहराई और संवेदना को आकार देंगी। प्रवासी साहित्य की जिन विशेषताओं स्मृति, अस्मिता के सवाल, प्रकृति, स्त्री-विमर्श, स्त्री-पुरूष संबंध, पीढ़ियों के संघर्ष व द्वंद्व, सभ्यतामूल्क अंतर्द्वंद्व, रंगभेद, यांत्रिकता पर चर्चा होती है, वे सब विशेषताएं किसी सायास प्रयास के तहत नहीं, बल्कि घटनाओं, स्थितियों, परिवेश, मन:स्थिति, रोचक चरित्रों के माध्यम से इस संकलन में प्रस्तुत हुई हैं।'

हिंदी और हिंग्लिश

ज़ाहिर है कि कई कहानियों में हिंगलिश का दिलचस्प प्रयोग मिलता है और कई पूरब-पश्चिम के टकसाली पूर्वाग्रहों को झकझोड़ती हैं। उनको पढ़ना दुनिया में बसे हुए हिंदी बोलने और लिखने वालों की दुनिया में प्रवेश सा करना है, उनकी सोच और मानसिकता से वाक़िफ़ होना है, जो भूमंडलीकरण के सिक्के का दूसरा पहलू भी दिखाती हैं, जहाँ विदेश जाकर दूसरे लोगों के बीच में बसने का नतीजा- अनवरत तुलना ,नैतिक आकलन तो होता ही है। समय तेज़ी से बदल रहा है और नए संग्रह की कहानियों में नए विषय उठाए गए हैं, अब केवल प्रवासियों पर ही नहीं, विदेशी संस्कृति और जीवन शैली पर आधारित कहानियां लिखी जा रही हैं। नारी का अधिकारवाद भी लोगों के लिए एक समस्या बना हुआ है किन्तु उसके अधिकारों की लड़ाई बराबर चलनी चाहिए और इस लड़ाई में लेखिकाओं की स्वयं एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है।

आरंभिक संग्रहों की बहुत सी कहानियों में भारतीय नायिका नैतिक मूल्यों से लैस विदेश चली आई है, क्या वह अपने भारतीय प्रेमी या पति पर भरोसा करे या न करे, उसके दूसरी औरतों से सम्बन्धो को नज़रन्दाज करे या न करे, सास-ससुर से दबकर रहे या उनसे अलग होकर नई ज़िंदगी बनाने की कोशिश करे?

प्रवास और विछोह से प्रेरणा

कुछ महत्वपूर्ण कहानियों को ज़िक्र करना चाहूंगी। प्रवास में जब जब मन खिन्न होता है, कारण चाहे जो भी हो – भारत के तीज-त्योहार, विवाहोत्सव अथवा जन्म-मरण – यादों की पिटारी खुल

जाती है और ऐसे वक्त पर बहुत सी कहानियां और कविताएं जन्म लेती हैं। कविता वाचक्कनवी की कहानी 'रंगों का पंचाग' होली की सैंकड़ो स्मृतियां, रूपक और बिंब दर्शाती है, जो एक प्रवासी के लिए अब कल्पनातीत होकर रह जाते हैं। अनिल जोशी जी के शब्दों में, 'हजारी प्रसाद सी प्रांजल भाषा में, बेहद खूबसूरत प्राकृतिक प्रतीकों और बिंबों के साथ, कविता जी ने जो चित्र प्रस्तुत किया है, उसमें रस है, लालित्य है, ऋतु दर्शन है जैसे भारत में होली का उल्लास व्यक्तियों तक सीमित नहीं रहता, अपितु पक्षी, पेड़ , पौधे, फल-फूल , कैसे होली के उल्लास से भर जाते हैं। यहाँ रंगों का पंचांग से प्रस्तुत ये अनछेद जोशी जी के कथन का समर्थ करता है।[4]

"सचमुच यह देश बेगाना है! यहाँ के पेड़ -पौधे तक बेगाने हैं। ... वहाँ घर तो मेरा अम्बड़ा, मेरा जामुन , शहतूत सब झूमने लगते थे। और तो और आँगन का नीम तक मिठा जाता था, छोटी-छोटी मधुमक्खियाँ उसे घेर कर चुमने लगती थीं, सफेद बौर से लद जाता था नीम। कच्चे , हरे , छोटे-छोटे शहतूत झूला झूलते। कोयल तो इतनी बावरी हो जाती अमराई में कि पंचम गाती न अघाती। चीख-चीख कर मतवाली हो इतना – इतना कूकती कि कई बार खीझ हो उठती थी। टेसु के तन -बदन में अंगारे दहकने को होते, उसकी डालियों की कलाइयाँ लाल चूड़ियों से भर जाती। पीपल पर लालिमा लिए हरे पारदर्शी पत्ते छूने पर भी शरमा जाते। अशोक की टहनियों के जमावड़े में कुछ नन्हीं शाखें छिप-छिपकर बातें सुनने रातों-रात प्रकट हो जाती। गन्ने' फिर मिलेंगे' कहकर जा चुके होते और सरसो के लचीले बुटे सारी देह पर अलंकार धारे मेरे खेतों में स्वर्णिण आभा बिखरते। कनकों से भरे खेत -खलिहानों में मानों स्वर्ण के अंबार भर जाते , ढेरों-ढेर गेहूँ! ढेरों-ढेर सोना! इक्का-दुक्का बादाम के पेड़ नंगे बदन पर हरे-धुले वस्त्र धारे अपनी छत तान लेने की वृत्ति से बाज नहीं आते थे।"

जैसे जैसे समय गुज़रा, वैसे वैसे लेखिकाओं के विषय बदले, भाषा, शैली और अंदाज़ बदले, जागरूकता आने के कारण उनके तेवर बदले।

अधिकतर कहानियों के पात्र भारतीय पात्र ही हैं जो या तो विदेशी ज़मीन अथवा स्थानीय व्यक्तियों से तालमेल बैठाने के चक्कर में रहते हैं जैसा कि बी.बी.सी की पूर्व-प्रमुख डॉ अचला शर्मा की कहानी, 'मेहरचंद की दुआ' में हिदू-मुस्लिम पहचान का प्रश्न उठाया गया है। अवैध प्रवासियों की जद्दो-जहद, सपनों और जेल की सलाखों के बीच झूलते मेहर आलम को इस अवैध जिंदगी में जब एक गुजराती महिला का साथ मिलता है तो उसके पाकिस्तान से बेटे को लंदन बुलाने की आकांक्षा पर सवालिया निशान लग जाता है। तोशी अमृता की कहानी में दिल्ली से नई-नई आई नेहा की मुलाक़ात परेश से होती है जिसका परिवार कई साल से ग्लास्गो में बसा हुआ है। फ्रंचेस्का ऑर्सीनी की यह आपत्ति कि परेश और उसका परिवार पूरी तरह भारतीय ही नज़र आता है, परेश नेहा से शिष्ट हिंदी में ही बात करता है और यह कि ग्लास्गो में बसे होने से उनमें कोई भी फ़र्क़ आया है, जायज़ नहीं है क्योंकि किसी भी व्यक्ति के लिए अपनी भाषा और संस्कृति को भूलना इतना आसान नहीं होता, तभी तो साउथ हॉल में बसे पंजाबी अथवा वैम्ब्ली में बसे गुजराती अथवा ईस्ट-लंदन में बसे बंगाली पचास साल में भी अँगरेज़ नहीं बन पाए। भारतीय ही क्यों, पारसी, पोलिश, रूसी आदि आज भी अपने ही तरह से जीते हैं, उनके इलाक़ों की दुकानों में भी उन्हीं के स्वादानुसार चीज़े बिकती हैं।

कुछ प्रवासी पात्र और उनका वर्णन

ऐसी कहानियाँ कम थीं जिनमें प्रवासी भारतीय और विदेशी पात्रों के रिश्ते का आकलन नैतिकता के मापदंड से नहीं होता था किन्तु अब कमला दत्त की कहानी 'तीन अधजलि मोमबत्तियाँ जला...' देखिए, जिसमें कोई भारतीय ऐकडेमिक छुट्टियों में किसी योगा-सेंटर (सेंटर फ़ॉर न्यू बीगिनिंग') के रिट्रीट में बिताती है और अपने आसपास के माहौल और लोगों के बारे में सोचती है, जो थोड़े समय के लिए ही एक दूसरे के पास आते हैं मगर एक दूसरे से बहुत कुछ छिपाते भी हैं। यहाँ न तो गहरा आकर्षण पैदा होता है और न वितृष्णा या निराशा। अनिल प्रभा कुमार की कहानी 'दिवाली की शाम' और पूर्णिमा वर्मन की 'नमस्ते कोर्निश' प्रवासी भारतियों की आर्थिक सफलता और व्यक्तिगत अकेलेपन को सामने रखती हैं। 'दिवाली की शाम' में न्यू जर्सी में बसे परिवार के पास सब कुछ है, बड़ा घर, पैसा, ढेर सारा सामान, अच्छी नौकरियाँ और सामाजिक रुत्बा, मगर हर कोई अपने में घिरा हुआ और अकेला नज़र आता है. दिवाली के दिन सब कुछ है, बस ख़ुशी नहीं है। [5]

मेरी कहानी भी आज की आर्टिफिशियल इंटैलिजैंस और वर्चुअल रियलटी की दुनिया पर सवाल खड़े करती है, जो शायद हर लेखक का प्रमुख दायित्व भी है। यह कहानी आई क्यू के आधार पर विकसित हो रही भविष्य की दुनिया का सटीक चित्र प्रस्तुत करती है और उसे प्रश्नों के घेरे में लेती है, प्रस्तुति में इसका भयावहपन अपनी विडंबना के साथ उभर कर आता है। ब्रिटेन के जीवन की ठोस भावभूमि पर टिकी यह कहानी यांत्रिक जिंदगी पर गहरे सवाल उठाती हैं। यह सवाल महिला होने के नाते जन्म देने के अधिकार और परवरिश करने के सवालों पर केंद्रित हैं।

'अनुजा' अर्चना पैन्युली की सशक्त रचना है, जिसमें एक नए अपरिचित देश में, गैर-कानूनी कामों में लिप्त पति के साथ संबंधों और अवैध इमिग्रेशन से उसके जीवन के विनाश के कगार पर पहुंचने की समस्या का चित्रण हैं। यहां एक पुरूष द्वारा धोखा दी गई महिलाओं के अंतरसंबंधों का जटिल ताना-बाना भी है। एक गैर – कानूनी कामों में लिप्त व्यक्ति के साथ जीवन जीने को अभिशप्त अनुजा के संघर्षों का जटिल संवेदनात्मक चित्रण अर्चना पैन्युली ने अपनी पैनी कलम से किया है।

इला प्रसाद की कहानी 'मेज़' में पक्षियों और प्रकृति का ठोस चित्रण है, जहां पुरूष के लैंडस्केप में प्रकृति उतनी प्रमुखता से नहीं आती है, वहीं स्त्री के मानसिक लैंडस्केप का वह अनिवार्य हिस्सा है। घर की एक बेकार और फालतू चौकी के सुंदर पक्षियों के डाइनिंग-टेबल बन जाने पर कहानी जिस उल्लास पर खत्म होती है, वह व्यक्ति को समष्टि से जोड़ने और उसमें महिलाओं की भूमिका को रेखांकित भी करता है। कहानी की बुनावट बड़ी महीन और सटीक है।

अनीता शर्मा ने अपनी कहानी 'शुवे' में अपने चीन से लंबे जुड़ाव के कारण भारत और चीन में सामाजिक-सांस्कृतिक-पारिवारिक मूल्यों की समानताओं को चिन्हित किया है। कहानी मल्टीनेशनल

कंपनी में वरिष्ठ पद पर काम करती अच्छी-खासी हट्टी-कट्टी शुवे की है जिसे जीवन साथी की तलाश है। उसके माता-पिता की निरंतर अपेक्षा और पश्चिमी संस्कृति से ओतप्रोत सामाजिक वातावरण में उस पर साथी ढूंढने का दबाव है। इस यात्रा में उस समय दिलचस्प मोड़ आता है जब उसे अमेरिकन फ़िटनेस कोच क्रिस एक साथी के रूप में मिल जाता है पर क्रिस के दिलफेंक और कई स्त्रियों से संबंध बनाए रखने की जानकारी मिलने पर शुवे के दिल टूटने और जिंदगी के नए रास्ते ढूंढने पर यह कहानी समाप्त होती है। कहानी में चरित्र चित्रण और विकास दिलचस्प है। शुवे के माता-पिता का व्यवहार, बेटी पर किसी साथी को ढूढने का दबाव किसी भारतीय माता-पिता जैसा है। अमेरीकी गोरे लड़के के प्रति आकर्षण भी भारत या भारतीयों की तरह ही है।

विचार-विमर्श

समकालीन हिंदी कथा साहित्य की दशा और दिशा विभिन्न सैद्धान्तिक विमर्शों के द्वारा तय की जा रही है। कथा साहित्य को स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श, आदिवासी विमर्श आदि नाना प्रकार के विमर्शों के खाँचों में भरकर देखने की परिपाटी चल पड़ी है। हिंदी में विमर्श, आलोचना की एक विशेष पद्धति के रूप में विकसित हुई है। यह साहित्य को देखने और अनुभव करने के लिए एक नया औज़ार बन गई है। इसी क्रम में प्रवासी साहित्य पर विचार करने के लिए प्रवासी विमर्श का भी उदय हो चुका है। प्रवासी साहित्यकारों के द्वारा रचित साहित्य 'प्रवासी विमर्श' के अंतर्गत अपनी विशिष्ट पहचान बना चुका है।

कथा साहित्य में परिवेश अथवा पृष्ठभूमि, कथानक एवं पात्रों की मनोवैज्ञानिकता को चित्रित करने में अत्यंत कारगर भूमिका का निर्वाह करते हैं। प्रथम दृष्ट्या कथा लेखन में कथाकार का परिवेश, निश्चित रूप से कथानक की बुनावट में असर पैदा करता है, इसके उपरांत कथाकार अपने कथानक के लिए भी एक विशेष परिवेश का चयन करता है जिसमें कथानक अपना विस्तार पाती है। जिस परिवेश में कथाकार जीवन व्यतीत करता है, वह परिवेश उसके लेखन में अनायास रूपित होता है। परिवेश कल्पित भी हो सकता है। कल्पित परिवेश को यथार्थ स्वरूप प्रदान करने की विशिष्टता, केवल अद्‌भुत कल्पना कौशल युक्त दृष्टि से ही संभव है। [6]

भारतीय परिवेश में रचित कथा साहित्य में भारतीय प्रकृति, समाज और समाज से जुड़ी इतर स्थितियाँ चित्रित होती हैं। भारत से बाहर के देशों में रहने वाले लेखक अपने इर्द-गिर्द के परिवेशजनित सामाजिक स्थितियों का चित्रण स्वाभाविक रूप से करते हैं। विदेशों में बसे हुए भारतीय मूल के रचनाकार ही प्रवासी साहित्यकार कहलाते हैं जो भारतीय भाषाओं में, मुख्य रूप से भारत में बसे साहित्य प्रेमियों के लिए अपने प्रवासी परिवेश एवं पृष्ठभूमि के परिप्रेक्ष्य में साहित्य की रचना करते हैं। प्रवासी साहित्य स्वभाव से परिवेश प्रधान होता है। प्रवासी भारतीय आज विश्व के हर कोने में बसे हुए हैं। दशकों पहले कृषि-मज़दूरी, रोज़गार और बेहतर आजीविका के संसाधनों की तलाश में अशिक्षित, अल्पशिक्षित और सुशिक्षित, सभी श्रेणियों के भारतीय समय समय पर विदेश गमन करते ही रहे और अधिकांश लोग जहाँ आजीविका मिली वहीं स्थायी रूप से बस गए। प्रवासी भारतीयों की विशिष्ट संस्कृति का विकास हुआ। प्रवासी साहित्य में स्थानीयता के परिप्रेक्ष्य में व्यक्ति और समाज के अंतर संबंधों को व्याख्यात किया गया। ब्रिटेन, अमेरिका, मॉरीशस, फिजी, वेस्ट इंडीज़, दक्षिण आफ्रिका, सूरीनाम, खाड़ी देश, कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलेंड आदि देशों में भारतीय मूल के असंख्य लोग बसे हुए हैं। इन प्रवासी भारतीयों में हिंदी के साथ साथ इतर भारतीय भाषी लोग भी बहुतायत से मौजूद हैं जो अपनी अपनी मातृभाषाओं में साहित्य रचना का रहे हैं। हिंदी में रचित प्रवासी साहित्य हिंदी साहित्य का अविभाज्य अंग बना गया है जिसका मूल्यांकन अभी शेष है।

प्रवासी हिंदी कथा साहित्य निश्चित रूप से कथानक, शैली और शिल्प की दृष्टि से भिन्न और विशिष्ट पहचान रखता है। उपर्युक्त देशों में रचित हिंदी साहित्य स्थानीय परिवेशजनित साहित्य है जिसमें उस देश और काल की स्थितियों का चित्रण होता है। हर देश में सामाजिक नियम, आचार संहिता, जीवन पद्धति उस देश की संस्कृति और परंपराओं से बँधे होते हैं। लेखक अपने परिवेश में जनित समस्याओं, स्त्री-पुरुष संबंधों, वैयक्तिक मनोदशाओं का चित्रण निजी शैली में करता है। विदेशों में रचित हिंदी कथा साहित्य कई अर्थों में भिन्न है। इसमें स्थानीयता के तत्व प्रधान होते हैं, किन्तु मानवीय संवेदनाएँ देश काल की सीमाओं का अतिक्रमण करते हैं इसीलिए प्रेम, राग, विराग जसई संवेदनाओं की अभिव्यक्ति प्रवासी साहित्य में उसी प्रकार दिखाई देती है जैसी कि सामान्य भारतीय साहित्य में। विदेशी समाज में विदेशी सभ्यता और संस्कृति के मानदंडों के बीच जीवन बिताते हुए भारतीय आचार-विचार, राति-रिवाज में पलकर बड़े होकर, रोज़गार के लिए विदेशों में बसने के उपरांत विदेशी जगत के नीति-नियमों के साथ टकराहट की स्थिति उत्पन्न होती है, जो कि स्वाभाविक है। इन स्थितियों से निबटाकर जीवन में सामंजस्य और संतुलन बनाकर जीवन को सुखी बनाना, एक गंभीर चुनौती है। पश्चिमी सामाजिक परिवेश में स्त्री-पुरुष संबंधों तथा दाम्पत्य संबंधों की अनिश्चितता बहुचर्चित एवं बहुचित्रित विषय है। प्रवासी हिंदी कथा साहित्य भी मूल रूप से स्त्री केन्द्रित ही है जो कि स्त्री की सार्वभौमकिता को रेखांकित करता है। प्रवासी कथा साहित्य की एक और विशेषता, स्त्री कथाकारों की बहुलता और प्रधानता है। अमरीका, ब्रिटेन, केनेडा आदि देशों में हिंदी कथा साहित्य के सृजन में भारत की भाँति महिला लेखन महत्वपूर्ण है। इन स्थितियों के साथ प्रवासी रचनाकार भारतीय परिस्थितियों से भी असंपृक्त नहीं रह सकते। स्वदेश से दूर रहते हुए भी वे समय समय पर अपने लेखन में भारतीय राजनीतिक व्यवस्था और सामाजिक गतिविधियों पर कारगर रूप से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। प्रवासी लेखकों की नई पीढ़ी में भारत के प्रति अद्‌भुत आकर्षण भरा है वे उस नोस्टाल्जिया (घर की याद की मनोदशा) से ग्रस्त दिखाई देता हैं जिसे वे अपनी रचनाओं में व्यक्त करते हैं। प्रवासी कथा साहित्य भारत के पाठकों के लिए एक नयेपन का बोध कराता है। प्रवासी कथा साहित्य में अपने अपनाए हुए देश के परिवेश, संघर्ष, विशिष्टताओं और उपलब्धियों का तन्मयता के साथ किया गया चित्रण भारत के लोगों का ध्यान आकर्षित करता है।

आज के युग में यांत्रिक प्रोद्योगिकी का विकास इतना बढ़ गया है कि मनुष्य जाति की सृजनात्मक शक्ति तकनीकी बोझ से दब चुकी है, आज के युवा वर्ग को विज्ञान ने काव्य और साहित्य कला

को निरूत्साहित्य किया है, धन का एकत्रीकरण, सुख – सुविधाओं की बहुतायत व्यापार बन चुका है । मधु कांकरिया 20वीं शताब्दी के मध्य से और इक्कीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक दौर के समाज में फैली उँच – नीच की जड़ों पर भी निगाह डालती हैं और उनपर तीखा प्रहार करती है । लेखिका ऐसे लागों की मानसिकता पर तीखा वार करती है । ऐसे में इनकी कथा साहित्य के अंतर्गत 'मधु कांकरिया के कथा साहित्य में युगबोध' विषय लेकर शोध कार्य प्रगति पर जिसमें सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक विवेचना के साथ – साथ दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक एवं शिल्पगत विशेषताओं से प्रभावित है । प्रस्तुत लेख 'मधु कांकारिया के कथा साहित्य में पारिवारिक युगबोध' के अंतर्गत निम्नलिखित बिंदूयों को देखा जा सकता है – संयुक्त परिवार की गृहणी जीवन, मध्यवर्गीय परिवार, आदर्श परिवार, शहरी परिवार, पति-पत्नी का सम्बन्ध, मातृत्व प्रेम या वात्सत्य तथा विधवा नारी का परिवार में युगबोध का विश्लेषण करने का प्रयत्न किया गया है । मधु कांकरिया एक समर्थ कथाकार के तौर पर पिछले चालीस वर्षों से कथा जगत में अपनी दमदार उपस्थिति दर्ज कराते रहे हैं । इनकी रचना संसार का फलक जितना व्यापक है, वैसा हिन्दी में कम ही रचनाकारों में दिखता है ।

परिणाम

स्त्री के प्रति विश्व सभ्यता का हर समाज अनादि काल से अनुदार ही रहा है। स्त्री का जीवन सदैव विषमताओं, विसंगतियों एवं समझौतों की ही कथा कहता है। प्रवासी कथा साहित्य इसका अपवाद नहीं है। प्रवासी साहित्यकारों में कुछ तो ऐसे लेखक हैं जो विदेशी सभ्यता एवं संस्कृति का आकलन भारतीय मानदंडों के आधार पर करते हैं, जिससे उन्हें कभी निराशा तो कभी उत्साह का अनुभव होता है।

प्रवासी कथाकारों ने विपुल मात्रा में हिंदी में कहानियों एवं उपन्यासों की रचना की है। प्रवासी कथाकारों में अमेरिका में स्थायी रूप से बसी हुई हिंदी की सुविख्यात लेखिका उषा प्रियंवदा हैं। जो एक सफल और तेजस्वी कथाकार हैं। इनकी अनेकों कहानियों में 'वापसी' कहानी ने हिंदी कथा साहित्य में पारिवारिक मूल्यों एवं वर्तमान परिवेश में निरंतर क्षरित होती हुई मानवीय संवेदनाओं का अंकन अद्‌भुत मार्मिकता के साथ प्रस्तुत किया है। यह कहानी एक ओर सेवा निवृत्त गजाधर बाबू की आत्मिक वेदना है जिसे उसकी संतान स्वीकार नहीं करना चाहती। उसके पुत्र और पुत्र वधू के साथ पत्नी भी उस व्यक्ति की आंतरिक व्यथा को समझने में असमर्थ है जिसने अपने परिवार के लिए सारा जीवन घर से दूर रहकर दराज इलाक़ों में नौकरी की, सिर्फ़ इस आशा को मन में सँजोये कि सेवा निवृत्ति के बाद वह सुख से अपने भरे पूरे परिवार में लौट आयेगा। उषा प्रियंवदा अमेरिका में रहते हुए भी भारतीय पारिवारिक मूल्यों और संवेदनाओं के प्रति जिस आत्मीयता और प्रतिबद्धता का अहसास इस कहानी के द्वारा पाठकों को कराती हैं, वह अद्‌भुत है। यह कहानी हिंदी कथा साहित्य में कालजयी कहानी के रूप में स्थापित हो चुकी है।

उषा प्रियंवदा के उपन्यास, उनकी स्त्री पक्षधरता को प्रबलता के साथ स्थापित करते हैं। पचपन खंभे लाल दीवारें, रुकोगी नहीं राधिका, शेषयात्रा, अंतरवंशी, नदी आदि उपन्यासों में उनके स्त्री पात्र एक भिन्न धरातल पर सामाजिक विद्रूपताओं को झेलते नज़र आते हैं। पचपन खंभे लाल दीवारें की नायिका भारतीय मध्यवर्गीय कुटुंब की आकांक्षाओं की पूर्ति करते करते रिसने लगती है। वह मध्यवर्गीय कुटुंब की धुरी बनकर, अपनी आकांक्षाओं और भविष्य को त्यागकर कृत्रिम उदात्तता का वरन करती है। सुशिक्षित स्त्री, का स्वार्थ त्याग, जिसे भारतीय स्त्री का कर्तव्य बनाकर उसे 'देवी' का दर्जा देकर उसे महिमामंडित करने की प्रथा पर लेखिका ने प्रहार किया है। हिंदी कथा साहित्य में 'पचपन खंभे लाल दीवारें' उपन्यास का विशिष्ट स्थान है। अमेरिकी परिवेश में जीवन यापन करने वाली एक बुद्धिजीवी लेखिका भारतीय मध्यवर्ग की विडंबना को विस्मृत नहीं कर पाती। प्रवासी लेखकों में भारतीय जीवन में व्याप्त विडंबनाओं और विसंगतियों को अधिक प्रखरता के साथ कथा साहित्य में प्रस्तुत करने का साहस, शायद विदेशी भूमि पर रहकर प्राप्त होता है। [5,6]

'नदी' उपन्यास में उषा प्रियंवदा ने भारतीय पुरुषों द्वारा ब्याहता पत्नी के साथ अमेरिकी परिवेश में किए जाने वाले छल और अन्याय का चित्रण सहजता के साथ किया है। पत्नी को मानसिक विकलांग बच्चे को जन्म देने के अपराध में पति उसे अमेरिका में बेसहारा छोड़कर अपनी सारी संपत्ति समेटकर भारत लौट जाता है। पत्नी अमेरिका में दर-बदर भटकती है। अन्य पुरुष की शरण में जाकर, अपने को समर्पित कर, वह भारत आने के लिए साधन जुटाती है। भारत में उसे ससुराल से पता चलता है कि पति ने दूसरा घर बसा लिया है किन्तु ससुराल के सदस्य उसे बहू का ही मान सम्मान देते हैं। वह अमेरिका लौट आती है, उसे पुरुष सहारा देते हैं किन्तु बिना मूल्य चुकाए, स्त्री को कहीं सहारा नहीं मिलता। संघर्ष करती हुई वह मानव समुदाय से दूर एकांत में अपना शेष जीवन बिताने के लिए सभ्य समाज का बहिष्कार कर देती है।

स्त्री वह नदी है, जो कभी, कहीं ठहरती नहीं है। वह निरंतर प्रवाहमान है। उसके मार्ग में पत्थर, चट्टान, पहाड़, बीहड़, जंगल, दलदल सब आते हैं, वह अपनी धार को मोड़ लेती है किन्तु बहाना नहीं छोड़ती।

'शेष यात्रा' उपन्यास अमेरिकी परिवेश में पति द्वारा अकस्मात परित्यक्त संघर्षशील के जिजीविषा की कथा का चित्रण हुआ है। प्रकारांतर से उषा प्रियंवदा के स्त्री पात्र अपने अस्तित्व की स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष का मार्ग अपनाते हैं और अपनी आत्मनिर्भरता को सिद्ध करने में सक्षम होते हैं।

उषा प्रियंवदा की अधिकांश कहानियों के केंद्र में अमेरिकी परिवेश में पुरुषों द्वारा छली गई विवाहित स्त्रियों के जीवन संघर्ष के वृत्त चित्र समाहित हैं। जो कि विदेशों में छली जाने वाली स्त्रियों को न्याय दिलाने की दिशा में कारगर क़दम उठाने के लिए समाज को प्रेरित करता है। "आधा शहर" उषा प्रियंवदा की ऐसी ही कहानी है जिसमें नायिका बुद्धिजीवी वर्ग कि महिला है, अंग्रेज़ी की प्राध्यापिका है किन्तु निजी जीवन में प्रेमी द्वारा अमेरिका में छली जाकर कलंकित होकर, जीवन की नई शुरुआत करने के लिए भारत लौट आती है।

उषा प्रियंवदा, प्रवासी हिंदी कथाकारों में लोकप्रिय और सार्थक कथाकार के रूप में समादृत हैं। अमेरिका की प्रवासी हिंदी

कथाकारों में सुषमा बेदी का स्थान महत्वपूर्ण है। यह एक प्रसिद्ध कहानीकार हैं। लंबे अरसे से अमेरिका में प्रवासी जीवन व्यतीत करने के बावजूद भारतीय संस्कृति और सामाजिक परंपराओं से अलग नहीं हो पाई हैं। उनकी यह भारतीय मानसिकता विदेशी परिवेश में भी अपनी ज़मीन ढूँढ़ लेता है।

विदेशी परिवेश में भारतीय मूल के स्त्री पुरुष विदेशी जीवन साथियों के साथ जीवन बिताते हुए, पारिवारिक, और सामाजिक अनुष्ठानों में भारतीय रूढ़िवादी परंपराओं के निर्वाह की हठधर्मिता कर बैठते हैं, जिस कारण उनके दांपत्य संबंधों में तनाव उत्पन्न होता है और उनका विवाह टूट जाता है। यह विषय प्रवासी हिंदी कथा साहित्य में अधिकाधिक चित्रित हुए हैं। सुषमा बेदी की कतिपय कहानियाँ इन्हीं प्रसंगों को उद्घाटित करती हैं। हिंदी की सुप्रसिद्ध कहानीकार उषाराजे सक्सेना लंदन में निवास करती हैं। लंदन (इंग्लैंड) की ज़मीन पर रहते हुए ही उन्होंने अपना संपूर्ण लेखन का कार्य सफलतापूर्वक किया है। उनकी कहानियों में कर्मठता और परिश्रम द्वारा अपनी पहचान बनाने में सक्षम नारी के चित्र मिलते हैं। प्रवासी कथाकरों ने अपने कथा लेखन के माध्यम से स्त्री के हर रूप को अपनी रचनाओं में बारीक़ी से दर्शाने का श्रमसाध्य प्रयास किया है। अमेरिका की ही एक अन्य कहानीकार पुष्पा सक्सेना की कहानी 'विकल्प कोई नहीं' पुत्र के मरणोपरांत पुत्र शोक की व्यथा को भीतर ही भीतर छिपाकार सहते हुए ही माँ, बहू के भविष्य को सुस्थिर करने के लिए विचार करती है। बहू को बेटी का दर्जा प्रदान कर, उसका विवाह करती है ताकि वह एक नये सिरे से जीवन शुरू कर सके। सास के स्थान से वह माता की भूमिका में स्वयं को ढालकर बहू को पुत्री की दृष्टि से उसे स्वतंत्र होकर जीने की प्रेरणा देती है। यह जीवन के प्रति एक प्रगतिशील दृष्टिकोण है जिसे लेखिका ने कहानी के माध्यम से समाज को बताने का प्रयास किया है। ऐसी स्थिति को स्वीकार करने के लिए पीड़िता स्त्री को बाह्य और भावानात्मक संबल की भी आवश्यकता होती है। माँ के रूप में उसकी सास ही उसे मनोवैज्ञानिक बल प्रदान करती है, वह बहू को समझाती है की 'दूसरा पति' पहले का विकल्प नहीं हो सकता, उसे जीवन को तुलनात्मक दृष्टि से नहीं देखना चाहिए, यह वैचारिक दृढ़ता और परिस्थितियों से समझौता करने की शक्ति स्त्री के लिए आवश्यक है, लेखिका ने सफलतापूर्वक सिद्ध किया है। [5]

निष्कर्ष

लंदन में स्थित उषाराजे सक्सेना प्रवासी हिंदी कथाकारों में अग्रणी कथाकार हैं। इनकी बहुचर्चित कहानी है – 'बीमा बिस्माट'। यह एक ऐसी अध्यापिका की कहानी है जो केवल अपनी जुझारू कर्मठता के बल पर एक अर्ध विक्षिप्त, अविकसित मानसिकता से ग्रस्त बालक का मनोवैज्ञानिक उपचार कर उसे ब्रिटेन का सक्षम नागरिक बनाती है। विपरीत परिस्थितियों में असाध्य और दुष्कर चुनौतियों को स्वीकार कर, जटिल से जटिल समस्या का समाधान ढूँढ़कर लक्ष्य को प्राप्त करने की स्त्रियों की अपराजेय शक्ति को इस तरह लेखिका अपनी कहानी के द्वारा पाठकों के सम्मुख लाती हैं।

अमेरिका और यूरोपीय दांपत्य जीवन शैलियाँ भारतीय दांपत्य जीवन विधान से काफ़ी भिन्न हैं। उन्मुक्तता और खुलापन पति-पत्नी, दोनों के व्यवहार में स्वाभाविक रूप से वहाँ के परिवेश में विकसित हो जाता है। भारतीय मूल के लोग उन देशों में बसकर भारतीय पारंपरिक गृहस्थ जीवन बिताते हुए धीरे धीरे स्थानीय सामाजिकता के रंग में ढलने लगते हैं। किन्तु जब पति या पत्नी कोई एक उस जीवन में व्याप्त उन्मुक्तता एवं विशृंखलता को अपना नहीं सकता तब वहाँ टकराहट की स्थिति पैदा होती है और दांपत्य जीवन बिखरने लगता है। अमेरिका के प्रवासी लेखक उमहस अग्निहोत्री की बहुचर्चित कहानी, 'क्या हम दोस्त नहीं रह सकते' इसी स्थिति से उत्पन्न बिखराव को चित्रित करता है। यह कहानी प्रेरक और समस्यामूलक कहानी है जो पति को दोस्त के रूप में ही देखना चाहती है जैसा उसने विवाहपूर्व था और जिस दोस्ती की भावना से उत्प्रेरित होकर उसने विवाह किया था। किन्तु पति विवाह के पश्चात पत्नी पर अपना अधिकार चाहता है, जिसके लिए उसने विवाह किया था। विदेशी परिवेश में स्त्री (पत्नी) अपनी स्वेच्छा का अधिकार माँगती है। वह मित्र को पति का रूप धारण करता हुआ नहीं स्वीकार कर पाती है जिससे तनाव पैदा होता है और उनका दांपत्य ख़तरे में पड़ जाता है। कहानीकार ने स्त्री के मनोविज्ञान को दर्शाने में सफलता हासिल की है। सुमन घई कनाडा के बहुचर्चित हिंदी कहानीकार हैं जिनकी कतिपय कहानियाँ स्त्री के संघर्षमय साहस का परिचय देती हैं। लेखक की कहानियों में विपरीत स्थितियों में कठिनाइयों से जूझते हुए बच्चों का पालन-पोषण करते हुए जीवन बिताने वाली स्त्रियों की संघर्ष कथा है।

अमेरिका की प्रवासी हिंदी कथाकार सुदर्शन प्रियदर्शिनी द्वारा रचित कहानी 'धूप' विदेशी परिवेश में पनप रहे असंतुष्ट विफल होते हुए दांपत्य जीवन को चित्रित करने वाली एक बहुप्रशंसित कहानी है। भारतीय स्त्री विवाह के बाद पति को जब स्वार्थ और आत्मकेंद्रित अमेरिकी साँचे में ढलते हुए देखती है तो उसे निराशा होती है। सुखी और आनंदमय वैवाहिक जीवन के उसके सपने बिखर जाते हैं। वह अपनी और पति की आकांक्षाओं के मध्य पसीने लगती है। उसके मन का अंतर्द्वंद्व से जूझती हुई, अपनी सूझबूझ से दांपत्य जीवन को सँवारने का प्रयास करती है। लेखिका ने कहानी में अत्यंत प्रभावशाली ढंग से कथा-नायिका के अंतर्द्वंद्व को प्रस्तुत किया है।

प्रवासी कथाकारों ने अपनी रचनाओं में विदेशी भूमि पर स्त्री की परिवेशजनित समस्याओं को प्रस्तुत किया है। यह कथा साहित्य विदेशों में निवास करने वाले भारतीय स्त्री पुरुषों की वैयक्तिक, आजीविका से जुड़ी तथा अन्य सामाजिक समस्याओं का चित्रण करने में सफल हुई हैं। विदेशों में बसे प्रवासी भारतीयों का जीवन, प्रवासी कथा साहित्य के माध्यम से ही मुख्यत: उपलब्ध होता है। यह कथा साहित्य इस तथ्य को भी प्रमाणित करता है कि प्रतिकूल परिवेश में भी प्रवासी भारतीयों में अपनी मूल पारंपरिक सांस्कृतिक एवं सामाजिक मूल्यों के प्रति लगाव है। कुछ अपवादों को छोड़, बहुसंख्यक प्रवासी भारतीयों में अपनी मिट्टी और अपनी संस्कृति के प्रति आस्था और विश्वास कायम है। [6]

संदर्भ

[1] Mathur, D. (ed.), 2015. Desi Girls: Stories by Indian Women Writers Abroad. United Kingdom: HopeRoad.

[2] Mathur, D. (ed.), 2015. हा जीवन! हा मृत्यु!. Onlinegatha.

[3] Mathur, D. (ed.), 2009. Panga (Stories). India: Medha Books.

[4] Mathur, D. (ed.), 2003. Aashaa: Hope/faith/trust : Short Stories by Indian Women Writers Translated from Hindi and Other Indian Languages. India: Star Publications.

[5] Mathur, D. (ed.), 1998. Odyssey: Short Stories by Indian Women Writers Settled Abroad. India: Star Publications.

[6] "साहित्य कुंज- डॉ, ऋषभ देव शर्मा". मूल से 16 जनवरी 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 17 अक्तूबर 2013.